

BM 2201

हकीकत १९९५-९६

(नगीनावाडी)

64

मिति वैशाख सुद ४ ✓ संवत् १९९५
से

काती सुद १५ संवत् १९९६ तक

(महाराणा जी श्री भोपाल सिंह जी)

(पृष्ठ १ से १७३)

५५

की की ५३
रु कर ता
५-५
५३६६
५६६५

परजाते श्रीजी हजुर अपोजी ही श्री राजा १६ सनकर का पादा नहुको
पछे हत नुडा कजला कर पोसा कथार ११११ हु सली डारी डीता ल मुला ऐडे
श्रमा न्यारो गना मरे के के की राजा का ह परजात डी जी म हा मरो
जा हाता मजा म सवार के पीपली गा १२ पपर डी सती सवार के नगनी
वा सप हार की राजा का माली सहु इ रे सु सु को लो डी हे से अपोजी ही
की राजा ही पो को श्री म हा मरो ग ११ का ह म डे मोषा स डे काम हु को

सागी
मोनका
लमा
जे
गरे धन
मल दम
ला ल मे
ता डी सा
जी माये

श्री सु सु को लो डी हे से अपोजी ही श्री राजा अगो लो हु को पोसा कथार ११११ हु
श्री मोण्डरी के से अगो लो अगार पी को ट पछे पती चार नकर हु डारी छे के
जु डी सती सवार हु वा - मो पडा डी ऐ गे र सागी मो न लाल जा पो सी
नजर मोषा पल करी करे ल नसी गा ट प हार मो पर सवार के समोर का ग
सुरज पोल के डी ही पाछे के शार सी के ल गले प हार श्री गा न वा सवे ह
जादि स राजी के सुरज पोल के का ग म के पा ग डारी हत नी प हार ता म जा म
सवार के हु डारी छे के म पी त म नी वा सप हार श्री राजा जो धुर डी दे वी लाल
मे तारी सालो गोर धन म ल हा जर हु को नजर मोषा पल कर के बो लो
डी हे से अपोजी ही श्री राजा सी ल कर ग पोषा ह जना नी ल ही कस्त हु को
श्री मा न ल डार डी मी सा ल प हार का ह मरो ग सु सु मा ऐ हु को

हकीकत रजिस्टर नगीना बाड़ी संवत् 1995

(MMRI Code: BH 2201)

पेज नं. 17

जेठ विद 2 सुके संवत् 1995 तारीख 5.5.1939

सांगी मोनलाल आयो, गोरधनमल देवीलाल मेता को सालो आयो

परबाते श्री जी हजुर अपोडी हो चीत्र कर दरसन कर छायादान हुवो पछे हाथ मुंडा ऊजलाकर पोसाक धारण हुई सलोका री कीताब मुलाएजे फरमा चा अरोग नाम रे बेटके बीराजया बाद परबात को जीमण अरोगया बाद तामजाम सवार वे पीपली घाट पदार कीसती सवार वे जगनीवास पदार बीराजया बाद मालीस हुई फेर सुख हुवो थोडी देर से अपोडी हो बीराजया दोपेरा को जीमण अरोगया बाद मे मेकमे खास को काम हुवो फेर सुख हुवो थोडी देर से अपोडी हो बीराजया अंगोलो हुवो पोसाक धारण हुई फर मोठड़ा केस अंगोछो अगरखी कोट पछेवड़ी धारन कर पुणी छे बजया कीसती सवार हुवा मोटरा को एजेंट सांगी मोनलाल आयो सो नजर नोछावल करी फेर बनसी घाट पदार मोटर सवार वे समोर बाग सुरजपोल वे कोठी पाछे वे फारसी के बंगले पदार चोगान पास वे हजारेसर जी वे सुरजपोल वे बाग मे वे पागड़ा री हतनी पदार तामजाम सवार वे पुणी छे बजया पीतम नीवास पदारया बीराजया जोदपुर को देवीलाल मेता रो सालो गोरधनमल हाजर हुवा नजर 5) 2) नोछावल कर बेटो थोडी देर से सीख कर गयो बाद जनानी बंदोबस्त हुवो श्रीमान बड़ा राणी जी साब पदारया बाद अरोगया सुख माए हुवो